Course-B.Ed,Part -1
Paper-7th, Learning Assessment
Prepared by -Dr Meena Kumari
Topic-Learning and Evaluation

अधिगम तथा मूल्यांकन

(1)प्रस्तावना__सीखनेके प्रक्रिया के दौरान छात्र-छात्राओं के व्यवहार में परिवर्तन लायाजाता है, जो शिक्षा के उद्देश्यों पर आधारित होता है ! शिक्षा के उद्देश्यों को किस स्तर तक हासिल किया गया है, इसके लिए मूल्यांकन की प्रक्रिया अपनाई जाती है! अतः अधिगम क्रियाएं निर्धारित उद्देश्य की प्राप्ति में किस सीमा तक सफल रही है, यह देखना मूल्यांकन प्रक्रिया का कार्य है! मूल्यांकन प्रक्रिया में शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति करना आवश्यक है!मूल्यांकन प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है तथा यह व्यापक रूप से बालक में होने वाले परिवर्तनों की जांच करती है! इस नाते शिक्षा के क्षेत्र में यह काफी महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है !अतः इसकी उपयोगिता एवं महत्व की जानकारी प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम अधिगम तथा मूल्यांकन के संबंधों को जाने!

(2) शैक्षिक मूल्यांकन का अर्थ तथा परिभाषाएँ- प्रत्येक कार्य का एक उद्देश्य होता है और हमें काम के बीच में यह पता करना आवश्यक होता है कि हम सही दिशा में बढ़ रहे हैं !ठीक इसी प्रकार अधिगम और शिक्षण प्रक्रिया के दौरान हमें पता लगाना पड़ता है कि जिस उद्देश्य को लेकर हम चले थे उस रास्ते में हम सही दिशा में बढ़ रहे हैं कि नहीं !इस तरह से उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में प्रयत्नों की सार्थकता का पता लगाना ही एक प्रकार से उसका मूल्यांकन कहलाता है! इस प्रकार से हम मूल्यांकन में हमें अपनी लगन, कार्य शक्ति, तथा उददेश्य प्राप्ति हेतु किया गया प्रयास इत्यादि सभी के परिणामों को आने का मौका मिलता है!शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान जो भी गतिविधियां अपनाई जाती है वह किस सीमा तक निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक है! इसका पता लगाने के लिए लगातार मूल्यांकन किया जाता है मूल्यांकन प्रक्रिया केमुख्य अंग है-१) शिक्षण उद्देश्य २)अधिगम क्रियाएं .तथा ३) व्यवहार परिवर्तन!यह तीनों अंग परस्पर एक दूसरे से संबंधित होते हैं तथा एक दूसरे पर निर्भर करते हैं !शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संगठन में अधिगम क्रियाएं आयोजित की जाती है ,जिन से छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन होते हैं !छात्रों के व्यवहार में आए इन परिवर्तन की तुलना शिक्षा उद्देश्यों से करके मूल्यांकन किया जाता है !अतः मूल्यांकन प्रक्रिया के इन तीन अंगों को एक त्रिभुज के रूप में भी दिख लाया जा सकता है जो एक दूसरे पर आधारित है !संपूर्ण मूल्यांकन की प्रक्रिया शिक्षा उद्देश्यों के इर्द-गिर्द घूमती रहती है! मूल्याकन .के द्वारा शिक्षण अधिगम उद्देश्य को प्राप्ति करने में सहायता मिल सकती है! शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान मूल्यांकन करने से निम्नलिखित बातों को पता करने में सहायता मिलती है!----

१)अधिगम अनुभवों का चयन पाठ्यक्रम के अनुसार है कि नहीं!
२)अधिगम अनुभवों को प्रदान करने की विधियां तकनीक तथा परिस्थितियां कितना उपयुक्त है!
३)अधिगम अनुभवों को प्रदान करने वाले शिक्षक की भूमिका कितनी प्रभावी तथा सार्थक है!
४) अधिगम अनुभवों की एक महत्वपूर्ण बिंदु छात्रों की भूमिका कितनी सार्थक तथा प्रभावी है!
५)अधिगम अनुभवों के माध्यम से निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो पाई है!

मूल्यांकन एक नवीन अवधारणा है जो केवल पाठ्यक्रम तथा पाठ्यचर्या तक ही सीमित नहीं है बल्कि इससे बहुत आगे पाठ्यचर्या से संबंधित सभी .उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विशाल तथा व्यापक श्रृंखला को ही मूल्यांकन कहते हैं!मूल्यांकन एक नवीन तथा नवाचारी प्रत्यय है जो पारंपरिक परीक्षा प्रणाली के द्वारा प्राप्त मापन अंको के ऊपर ही आधारित नहीं होता बल्कि अनेक प्रकार की मापन प्रविधियां, तकनीकी ,परीक्षण तथा यंत्रों का प्रयोग करके संपूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है!यह सिर्फ छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को ही नहीं बल्कि उसके संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास से संबंधित होता है वस्तुतः मूल्यांकन एक व्यापक तथा बहुआयामी प्रक्रिया है!मूल्यांकन को विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों द्वारा अलग अलग तरीके से परिभाषित करने का प्रयास किया गया है ,कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएं निम्नांकित रूप से है:-- १)"रेमर्स, गैज एवं रूमेल के अनुसार"मूल्यांकन केवल मात्र परीक्षण कार्यक्रम नहीं है मूल्यांकन हेतु परीक्षण काम में लाए जाते हैं परंतु यह परीक्षण उन विभिन्न तकनीकी में से एक है जो एक संपूर्ण मूल्यांकन हेतु काम में लाई जाती है!"
२)ब्रैडफील्ड तथा मोरडोक के अनुसार मूल्यांकन किसी सामाजिक सांस्कृतिक अथवा वैज्ञानिक मानदंड के संदर्भ में किसी घटना को प्रतिबंधित करना है जिससे उस घटना का महत्व तथा मूल्य ज्ञात किया जा सके!
३)राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने मूल्यांकन के प्रत्यय को स्पष्ट करते हुए कहा है कि यह एक सतत एवं व्यापक प्रक्रिया है जो देखती है कि निर्धारित शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है तथा कक्षा कक्ष में दिए गए अधिगम अनुभव कितने प्रभावशाली है!
४)क्विलिंग एवं हैना के अनुसार मूल्यांकन
 वह प्रक्रिया है जिसमें विद्यालय द्वारा बालक में होने वाले व्यवहार परिवर्तनों के संबंध में सूचना एकत्रित की जाती है तथा उसकी व्याख्या की जाती है!
५)भारतीय शिक्षा आयोग के अनुसार मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है !यह संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है और निश्चित रूप से इसका संबंध शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति से है तथा छात्रों के पढ़ने की आदतें, अध्यापकों के पढ़ाने की विधियां पर यह बहुत गहरा असर डालता है ! इस तरह यह न केवल शैक्षिक उपलब्धियों के मापन में सहायक है बल्कि संपूर्ण प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी भी बनाता है !

इस प्रकार उपयर्युक्त परिभाषाओ को देखने से पता चलता है कि मूल्यांकन परंपरागत परीक्षा प्रणाली से बहुत अधिक व्यापक तथा अर्थ पूर्ण अवधारणा है! इसका संपूर्ण संबंध संपूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया तथा उससे जुड़े सभी तत्वों से है ताकि इस प्रक्रिया को वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सर्वोत्तम रूप से काम में लाया जा सके ! मूल्यांकन व्यापक और प्रयोजन पूर्ण अर्थ में एक सतत प्रक्रिया के रूप में जाना जा सकता है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों से ऐसी सभी सूचनाएं और जानकारियां इकट्ठी करने का प्रयत्न किया जाता है जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में संबंधित जैसे उद्देश्य पाठ्यक्रम ,विधियां ,तकनीकी ,अध्यापक और विद्यार्थी के प्रयत्नों को स्वीकार करने, उन्हें पर्याप्त सुधार लाने तथा उसको उचित मूल्यांकन करने में पर्याप्त रूप से सहायक सिद्ध होती है!

(3) मूल्यांकन की विशेषताएं:--शिक्षण अधिगम में मूल्यांकन एकबहुत ही महत्वपूर्ण एवं आवश्यक अंग है! अतः इसमें निम्नलिखित विशेषताओं का होना अति आवश्यक है_------
१)वैधता (validity)--एक अच्छे मूल्यांकन का यह एक महत्वपूर्ण विशेषता है! अच्छा मूल्यांकन वही माना जाता है जो विषय के अनुकूल हो अर्थात उसके द्वारा वही मापा जाए जिसे मापने के लिए उसे प्रयोग में लाया गया हो !उदाहरण स्वरूप अगरविज्ञान की योग्यता को मापना है तो उसी विषय में मूल्यांकन करना है न कि अन्य योग्यताओं को मापा जाए!
२)विश्वसनीयता(reliability)---जब किसी परीक्षा में विद्यार्थी को योग्यता को असली रूप में मूल्यांकन करने पर परिणाम में अंतर नहीं आता है तो उसे विश्वसनीय परीक्षण कहते है!अगर एक बार परीक्षा में किसी छात्र को परीक्षक द्वारा 100 में से 70 अंक दिया जाता है तथा दूसरी बार उसी परीक्षक द्वारा छात्र को 100 में से 30 अंक दिया जाता है तो ऐसी परीक्षा कभी भी विश्वसनीय नहीं हो सकती!

३)वस्तुनिष्ठता (objectivity)_-- अगर किसी परीक्षा में छात्र को अपनी रुचि ,भावनाओं तथा व्यक्तिगत दृष्टिकोण का प्रभाव उत्तर देने में न पड़े तथा अध्यापक का व्यक्तिगत पक्षपात उसकी मानसिक अवस्था, रुचि तथा भावनाओं का प्रभाव छात्रों की अंक पर न पड़े तो ऐसे गुण को मूल्यांकन मे वस्तुनिष्ठता का गुण कहते हैं! यह मूल्यांकन का अति महत्वपूर्ण विशेषता है!

४)व्यवहारिकता(practicability)_---मूल्यांकन का व्यावहारिक होने का अर्थ यह है कि मूल्यांकन करने में आसानी हो, मूल्यांकन का जो माध्यम है उसे भी आसानी से व्यवहार में लाया जा सके तथा मूल्यांकन के पश्चात अंकन करने में भी जब आसानी होती है !

५)व्यापकता(comprehensiveness) ---मूल्यांकन का उद्देश्य पिछले पढ़ाई संबंधित बातों के विषय में पता लगाना होता है कि छात्रों को ठीक प्रकार से समझ पाया है अथवा नहीं तथा उनकी योग्यता कितनी है और इनकी ज्ञान की वृद्धि कहां तक हुई है! अतः मूल्यांकन ऐसा होना चाहिए कि इस दिशा में वह अधिक से अधिक जांच कर सकें, उसमें सभी प्रकरणों ,प्रकरणों के सभी अंग तथा अन्य उपयोगी ज्ञान की उचित जांच की क्षमता हो जिससे छात्रों की व्यापकता को मापा जा सके!

६)निदानात्मकता (diagnosticity)---एक अच्छे मूल्यांकन के लिए या गुण होना अति आवश्यक है! जिस तरह किसी भी रोगी के रोग का उचित निदान ,उपचार के लिए आवश्यक है! उसी प्रकार विद्यार्थियों की कमियों तथा रुचि का उचित ज्ञान आवश्यक है जिससे उनकी बाधाओ को दूर किया जा सके! जो शिक्षा में उचित सहयोग दें!